

④

श्रीगुरुकालीकोसहस्रनामः॥ श्रीगुरुका

श्रीगणेशायनमः॥

महान्तसिंहमाकस्य

प्राम्पतेद्यप्य

ब्रह्मभुक्कलिलदानी

कालकालीनमामाहम्

आशा सरस्वती

1.473

ASHA ARCHIVES

१ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ नमो श्री कृष्णाय ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

श्रीलक्ष्मिकुवाच॥

श्रीलक्ष्मिकउवाच॥ ॥ॐ नमस्त्रिभुवनेशाय ब्रह्मणेविष्णुरूपिणे । ईश्वरा

यपरेसायगुरवेसिवरूपिने॥१॥ यस्याः प्रसादाद्देवोपि सर्वज्ञः ससिवो न

वेत् ॥ नानोमि य र मे स्त नों सर्व व्यापिनी मी स्वरी म् ॥ २ ॥ वृत्तादु कोटिल

क्षमानी. नमस्तस्मै हते यथा॥ तां कालाग्र्यास्तैरतां गुह्यकाली नमो मयि हम्

॥३॥ यथा सर्व्ववितनूते सावित्र्यं पुनः पुनः ॥ यथा च नेन देवोऽपि त्रिवः सर्व्वतो १

मीढासं जशे मरणावर्जितं ॥ ५ ॥ पुण्यसुगमवोरुदेरासत्तपासंधारचउ

शौ ॥ प्राप्नवान् परमं शौनं. स्रवरजं नमस्तमन् ॥ ६ ॥ शिवेन विष्णुवेद

तं विष्णुं शुश्रूषन्नेदं दौ ॥ ब्रह्मनाथवसिष्ठायै बसिष्ठो मनवेद दौ ॥ ७ ॥ म

तारोज्यकामैः सदाजपे कमानसः॥ यशोधि मेखलां यध्वीं ससा समन

नकराह ॥८॥ विना वनै विना ध्याने विना यजामावे साये ॥ श्री ॥ सो ॥

न होमादि बिना बिद्य फलय दत्त ॥१॥ तावे न स दस्यो नं बिना केन

वर्णोदरे ॥ तस्या तर्ज्ययि शोभते सप्तमदशमं ॥ १० ॥ तस्या तर्ज्य

यन्मादुरागिस्त्रिगुणैश्च वारित्यज्यघठनामसहस्रक॥१०॥यस्यानाम

सहस्रेण यठनान्नपुनर्जनिः॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यठनीयं समाहितं
 ॥११॥ उकायमतिरव्ययं कृतायाये नमो ह्यरीम ॥ ॐ अस्य श्रीगुह्यका
 लीदेवतामंनुसहस्रनामस्य श्रीसदाशिवत्रयधिरनुब्रूयच्छुद्धः श्रीगु
 २ ज्येकालीदेवता ॐ बीजं फे सत्तं ड्री कीलकं वल्लवेदने जपे विमि २
 योगः॥ ॥ वल्लादिपंचकयुगः श्रुतिदिक्कतीनां मूराडधूमेरवसिवा
 प्रलयानलेषू ॥ तस्यैव गेदशासरहृदविद्रुमांते यन्नेस्वितां न

गवतीं यरमादशगस्याभू ॥१२॥ स्त्रीहे मकोलकपि त्रक्षतुरंगतार्थयो
 गेस्वरीं मकरमानवपकिवकुसू ॥ मूलं कूरांच परं सुमुद्रयागपात्रं
 खड्गकुवालकसिरोकेतपानिपद्मा ॥१३॥ ॐ ड्रीं क्रीं क्लीं ह्रीं स्त्रीं नमः ॥
 ॐ गुह्यकालिमाहाकाली भद्रकाली सुमंगला परापरे श्वरी धूम्रा परमेश्विव
 रप्रदा ॥१४॥ चन्द्रिका चर्चिका दुर्गा चासुराडा सर्वबाहिनी ॥ चराडघराडा च
 राडाहासा चराडवेतालवाहिनी ॥१५॥ चारुप्रसन्नवदना चराडमुराडह

विनासिनि ॥ चण्डोद्यमाहारेवा चोत्तचक्रप्रकाशिनी ॥ १६ ॥ चण्डेश्व
 प्राणचरीचण्डफेवररेगिणी ॥ प्रचण्डैस्तदर्थ्य द्वांसमपातधाप
 हा ॥ १७ ॥ अट्टा अट्टेश्वरिभिमा । क्षीयना नैरवाप्रिया ॥ माहाभाग्यप्र
 दाभाग्यनवधविजोचनी ॥ १८ ॥ नवानि नवरोगघ्नी नक्तनक्ती
 प्रवोधिनी ॥ माहामोहप्रशमनी महोत्साहप्रसोदिनि ॥ १९ ॥ ॥
 क्षमाकान्तिप्रभाय्यान्त्याचण्डयोगेश्वरि शिवा ॥ तेजोरूपा तेजमयी ३

दिव्यतेजप्रकाशिनी ॥ २० ॥ ज्योतिर्वक्त्रा माहाचण्डयोगेश्वरिस्त
 हाप्रभा ॥ सिंहवक्त्रा सिवा वक्त्रा कपिवक्त्रा गजानना ॥ २१ ॥ ता
 श्ववक्त्रा शंकुवक्त्रा सक्षवक्त्रा हयानना ॥ नरवक्त्रा नीलवर्णा
 चतुर्पंचासद्योयिना ॥ २२ ॥ चिद्वत्तमुद्रिकाहस्ता हस्ता नरसु
 राडालीभूषिता ॥ सुव्यमुरगालिभूषाच नानारत्नविभूषि
 ता ॥ २३ ॥ दुष्टप्रसमणी रोद्री कालिका सिंहवाहिनि ॥ नरसु

राविभूषाचसुक्कसुराविभूषिता॥२४॥कालकातीदीप
कालीषधनावल्लिभक्षणि॥जयाजयन्तीविजयाजयदुस्वप्न
नासिनी॥२५॥बुलप्रेतासनाचारुकमलाकमलपिया॥दीप्राजि
लाललजिल्लविभूजिफाजराघता॥२६॥चन्द्रार्कवद्विन
यनाविभूषेतासनास्थिता॥सूर्यमण्डलमध्यस्थानानाक
र्मफलप्रदा॥२७॥बुलप्रेतासनाशेडीकामिनीपद्मलोचना॥

ईश्वरसनसंस्थाचईश्वरीश्वरवधना॥२८॥महाप्रभावामहती
महदेस्वर्यदायिनी॥सदासिबोसनासामदेवमातासुधास्रता
॥२९॥कोकुरावस्थितामायामहामृतवहास्मृतिः॥महाकेरव
वीरवारावद्रुद्रमयंकरी॥३०॥महासेनस्यजननीप्रतिष्ठाया
लनीसूभा॥निसूम्नसूम्नदलनीमधूकैटभनासिनी॥३१॥
दूर्ध्वर्षदमनीकन्याविडालाश्वप्रमर्दिनी॥रक्तबीजविशेष

श्री महिषासुरव्यातिनी ॥ ३२ ॥ उग्रचरण उग्रसूया उग्रसज्जु
निघातिनी ॥ उग्रपापक्षयकरी उग्रणासनसासनी ॥ ३३ ॥ उ
ग्राश्रुध्वरी आत्री उग्रभूषण भूषिता ॥ महापापप्रसम
नी उग्रकर्मकरी किला ॥ ३४ ॥ उग्रचरण प्रचरण चचंरुण
ग्राचरण नायिका ॥ चरण चरण वती चरणी प्रचण्ड चंडनादि
नी ॥ ३५ ॥ योगिनी च महाचरण चरण रूपाति चरिणिका ॥ खड्ग

नी स्त्रिनी दोरा हुंकारे राव बोदिनी ॥ ३६ ॥ पासिनी सक्तिनी
चरणी महाकंदलधारिनी ॥ खड्गोदनी मूढिनी च चोषधूचि
किनी परा ॥ ३७ ॥ अरण रावप्रिया नित्यासैलिनी कूदिनी महा
काल प्रेत भूतवती ॥ महाकंकालधारिणी ॥ ३८ ॥ नकुलिनी च
रायनी धारिणी वंशिनी सुमा ॥ षंड प्रदण्ड काहसा वंदिता
त्रिदण्डिनी ॥ ३९ ॥ भूवे अक्षप्रसिही च वस्त्र मूढरधारिणी ॥

ई कारिणी डिं डि मीच श्री करी कर्त्रधारिणी ॥ ४१ ॥ महं क संघत
वती महा डिं डी मनादिनी ॥ त्रिसुलिनी दण्डिनी च धनूः कल
सधारिणी ॥ ४१ ॥ पद्म कंत यस्त कंच धारिणी ॥ छुरिका तो मर
ई वती महा कुरण्ड ममालिनी ॥ ४२ ॥ नशावर्त धनवती परमा ६
नन्ददायिनी ॥ पारमेसी महारौ डी भक्त वस्या भवप्रिया ॥
॥ ४३ ॥ व्योमवामे स्वरी वामास्वेचरी दिव्यरी धृतिः ॥ गोच

री भूचरी सौम्या पतङ्गी पालकी सिवा ॥ ४४ ॥ नरविष्मवराहा
गोसर्पस्या विविधानना ॥ सुक्क मूर्तिः सील मूर्तिः सूर्य मूर्तिर्गु
णा श्रयाः ॥ ४५ ॥ सोम मूर्ति महानन्दाप्रभा मूर्तिर्महानभः ॥ श्री
र मूर्तिर्महार्चिष्वा महाकेतुकुलीशिका ॥ ४६ ॥ यन्ताकिनी द
या संभामूल प्रकृतिरी स्वरी ॥ मार्तण्ड मण्डलचरी सिंदूरति
लकप्रिया ॥ ४७ ॥ अक्षसाहस्र मूर्तिचचण्ड मूर्तिर्महेश्वरी ॥

महाहंसमतीविष्णुः मातीविमलसिंहिका ॥ ४८ ॥ महाखण्डमती
सिंहसतीवीरमतीप्रभा ॥ मूहीरमतिमातंगीक्षतक्षरमहा
मती ॥ ४९ ॥ विचित्रचित्रितमतीवीरसिंहमतीपरा ॥ मेरसिंह
मतीशाना महारस्मिमतीकृष्णा ॥ ५० ॥ महाकोकनसंस्थानी
महाईदामरीचिका ॥ सधर्गान्यानिव्यगाम्यामहामीनामहासू
नी ॥ ५१ ॥ महाचण्डनीदिव्याङ्गी महाविश्राप्रभृन्मिजा ॥ महा

नरीक्षनेजाम्यासिद्धियोगिनिभामिनी ॥ ५२ ॥ गजगाम्याम
हानदीमहालम्बयतीकृष्णा ॥ महाचण्डमण्डलाम्यासौनकी
अषनीद्यनी ॥ ५३ ॥ पटङ्किनी पटङ्की गंधकालीभतङ्किनी
॥ केवर्तिनी पंचकाचमतकामिनीरक्षसी ॥ ५४ ॥ भनकीभन
कीश्रीचूमादंष्ट्रनिरूपिका ॥ ज्वालनी गगनेसीचमायागं
धारिणीनदि ॥ ५५ ॥ विम्यासानामहामायासुभगानदिवीकु

८
का॥ उमानासिप्रयानन्यामहानन्यासूनंदिनी॥ ५६॥ ईडामरीचिर्वि
शाम्यामीनजाम्याप्रबोधिनी॥ जराडनीरौद्रिणीदिव्यासिच्यन
रिधतजास्मता॥ ५७॥ अंबिकाकाहिकाभारसाक्षात्साधूजनाचि
ता॥ विशाधरीजराडनीचमास्तसर्वदास्मता॥ ५८॥ उल्कासूची
लोकसूचीवरुणीसीवर्णमालिका॥ नीमानमाभूतंगारव्याविश्या
कालप्रवर्तिनी॥ ५९॥ ईश्वरीसूदरीस्ताहासूद्यामराडलचारि

णी॥ करालाविकरालाचरवगास्यासववाहिनी॥ ६०॥ सृगंलीघृत
नादज्वालोमकालिचकौलिकी॥ योनिश्चसिद्धियोनीचमहायो
नीसूयोनिजा॥ ६१॥ सिद्धियोनीसंखयोनीमहासंखस्थियोनि
का॥ दिव्ययोनीर्महादिव्ययोनिषणाक्षयोनि॥ ६२॥ महा
भक्तभक्षीचमहासंहारिणीसिवा॥ महारक्तेस्वरीरौद्रीमहा
कृतान्तनासिनी॥ ६३॥ महाभक्तभक्षणीचकालसंहारदा

षिनी॥ कालरात्री महारौ डी चारु डाली कालनाशिनी॥ ६४॥ वी
 रेखरी वीर पूष्पा कालघ्नी भयदा रिणी॥ महामैर वं संहारी
 वृष्णारुण कर्बिहारिणी॥ ६५॥ संहार कालिका भद्रा महामयवि
 द्यातिनी॥ सृष्टिकाली महादिव्यास्त्वितिकाली महोज्ज्वला॥ ६६॥ ८
 संहार कालिका दामा कालग्रसन कालिका॥ रक्तकाली महोयाचका
 लियमसमार्गिका॥ ६७॥ मृत्युकाली गृध्रकाम-महामार्तारुण काली

का॥ महाकालाग्नि काली च परमार्किक कालिका॥ ६८॥ कालकाली
 महाघोरारुचरुण भैरव कालिका॥ मंत्रकाली हंसकाली क्रमकाली च
 जमरी शानकाली चक्रकाली चक्र ऊँकार कालिका॥ महागगना
 काली च पुष्पाभासाच कालिका॥ ७०॥ महासद कालिका च महावलान
 कालिका॥ अचिका लिङ्ग चिकाली भासा श्री हंस कालिका॥ ७१॥
 चंड भासा कालिका च भासा डामसर कालिका॥ भासा योगी महा

भासोगगनकालिका ॥ ७२ ॥ भासांस्वरकालिकाच भासो नक्षत्रमुका ॥
 लिका ॥ सूर्यकालिचन्द्रलि अग्निकालीयुभिषणा ॥ ७३ ॥ वायुकाली
 योमकालीमनकालीसुव्यापिनी ॥ सर्वकालीसिद्धिकालिनिरालंभा
 तुकालिका ॥ ७४ ॥ कालिकादंष्ट्रिणीमुद्रा गुह्यामालेलिहानका
 कपालमुद्राकालप्रीमुद्राकालनासिनी ॥ ७५ ॥ समयप्रीधोरमु ॥ ७६ ॥
 द्राविकरालिचभ्रामरि ॥ श्रीकुन्दासाजानमुद्रा ॥ सिवकपालमुद्रिका
 ॥ ७६ ॥ योनिमुद्रा परोमुद्रामहामुद्राचक्रादशी ॥ क्षिपिणिधीवरीका

लीमुखीसंस्थिसौद्रिकाप्रभा ॥ ७७ ॥ दोस्यांम्यासौरिनिधोरकंवर्त्तिखट
 कीमला ॥ रजकीद्विधिनीजाना अठकीकोनघटिका ॥ ७८ ॥ अग्निवक्त्रा
 चपिंगाक्षिरमणिचमनीजर ॥ गोकर्णिगककर्णिचचामुराअसो
 कर्णिका ॥ ७९ ॥ विष्णुमुखिषसत्राशालोकमाताप्रभाविनी ॥ वल्लाननावल्ल
 वलाकपिलायूतनाभया ॥ ८० ॥ भग्ननासाभग्नकर्णासंयुक्तरजमात
 का ॥ गृह्येश्वरीसारदाचजलेश्वरीचपार्थनी ॥ ८१ ॥ कृलालीहरि

सी माया महा माया च अम्बिका ॥ रक्त वाचा महा काली घंटाली चिचिनी मृडा ॥
॥८२॥ कुर्च केसी छिन्न मत्ता महा लक्ष्मी त्रिकोण गा मातङ्गी सिव दूति चः सि
धा वा पद्म मंदिर ॥ यक्ष योनि निरावा चा मूर्ति गी भग मालिनी ॥ चरण
॥९१॥ ख्या त्रिजटा च्या ना त्रिशक्ति मालका जरा ॥८४॥ कपालिनी मालिनी च ॥९१॥
कामिनी कमलालसा ॥ मने श्वरी उग्र काली लक्ष्मी माला लु मालि
का ॥८५॥ कृणाली रक्त चरण रव्या मा मलक्ष्मी मनो भवा ॥ जित मा

ता जिनेन्द्रा च सारदा हे सवोहिनी ॥८६॥ महा ग्रीवा च सूरता स्फ
भक्ता च मनो हरी ॥ अम्बर म्वा परम्वा च नग सैला गुवासिनी ॥
॥८७॥ सूक्ष्म कंदल भूषां गी सूक्ष्म कंदलु चारिणी ॥ दंष्ट्रिनी वि
कटा स्या च सिव दूती व्यन सनी ॥८८॥ सर्व माला विभूषां गी सर्व
कृणाल चारिणी ॥ सप्त छिन्न सरो माला शायदा नावलम्बिनी ॥
॥८९॥ बहु वक्रा बहु भूजा बहु पादा गरो श्वरी ॥ त्रिकोण विन्दू

नीलया पंचवकासवासिनी ॥ ८० ॥ स्थूलमार्गस्थितासूक्ष्मासूक्ष्मा
यावृषिकोचिनी ॥ मूलाधारनिराधारेवक्रिकुराडकनालया ॥
॥ ८१ ॥ स्वासोक्षासगतिजीवायाहिनीवक्रिसंश्रया ॥ वरीतंच
॥ १२ ॥ समूधानात्कालीलास्यादूलेख्या ॥ ८२ ॥ कालचक्रभूमिधाता ॥ १२ ॥
निधुमाप्रमनासिनी ॥ वात्सालीमेघमालाचक्रवृष्टिसस्यव
र्धिनी ॥ ८३ ॥ अकारचवकारचउकारैकाररूपिनी ॥ श्री

कारवीजसूयाचक्रींकारस्वरवासिनी ॥ ८४ ॥ सिंदूररुगावरी
चसिंदूरतिलकप्रिया ॥ स्वामाचवस्यवीजाचलोकवस्यविभा
विनी ॥ ८५ ॥ गजाननाहयमुखारासजास्यासूकानना ॥ च
र्निकावनचारिणेः परमंत्रविदारिणी ॥ ८६ ॥ सहस्रास्या
सहस्राक्षसहस्रभुजधारिणी ॥ सहस्रपादधारिणेः
पुनर्मार्गप्रबोधिनी ॥ ८७ ॥ कोटिवक्त्रकोटिपादाभ्रवा

कोटि धृता सदा ॥ महं मारी विनी डच तं प्रमत्तु विना सिनी ॥ २४ ॥
 चंड मण्डल शंका सा चंद्र मण्डल वा सिनी ॥ प्रणि मादि गुरो
 पेता अस्य सुका मरुपिनी ॥ २५ ॥ अक्षि विप्रदा सो राद्रु
 ॥ १३ ॥ दान वधातिनी ॥ अनादिनी धना युक्ति चतुर्वर्ग फल प्रदा ॥ १३ ॥
 ॥ १०० ॥ गिरी कर्णी प्रती कासा सरत्तु मृदलोचना ॥ भूत भव्य
 भविष्य शोभत भावन भाविनी ॥ १ ॥ वाम मार्ग रता वामा सिव

वामाङ्ग वा सिनी ॥ मंगला वस्त्र सीला च प्रेत मार्ग प्रवोधिनी ॥ २ ॥
 कृत्रिका च कुज कुजा माता मालिनि मानदा ॥ जाला मूर्खी वेगवती
 उमा स्तुका महेस्वरी ॥ ३ ॥ सभा का माच प्रकृति र्द्यौषिनी शेर
 विनी ॥ क्रम मण्डल मध्ये स्था क्रमेणी च नवात्मिका ॥ ४ ॥ वा
 ली रौद्रि गृह्यवती वैष्णवी द्यौरुपिनी ॥ गत सी ही रा क
 वती चा मृग चर्चिका भगा ॥ ५ ॥ भव्या विर्वा भवास्था च महभागा

महाबला ॥ योगिनी रागिनी रम्या रत्नकंजकधारिणी ॥ ८॥
गजचर्मकृतांगी च व्याघ्रचर्मकटिस्थिता ॥ सिंहचर्मनितं
॥ ९५ ॥ वीच कालचर्मोत्तरीयका ॥ ७ ॥ विश्वलक्ष्मी विश्वमाताजा ॥ ९६ ॥
नक्षत्रस्वरूपिणी ॥ सर्वमंत्रमयी विश्वासर्वमंत्राक्षरायरा ॥
॥ ८ ॥ मातृमण्डलमध्यस्थामातृमण्डलवासिनी ॥ कुमारजन
नीश्वर्यासूक्ष्मायापनासिनी ॥ ९ ॥ मोनलक्ष्मी चित्सूभगा

स्तीनलासीलसंयुता ॥ दिव्यसंभनराकासिंघातालस्योदका
लिका ॥ १० ॥ मन्दसूक्ष्मावातक्ष्मायमक्ष्मा निवासिनी ॥ अप
राजिताचे अजितारामणी रामनासिका ॥ ११ ॥ सूक्ष्मासूक्ष्म
सूक्ष्माश्वाभाविकरालीकरालिनी ॥ राममाता रामपूज्याराम्ये
दाराम्यपूजिता ॥ १२ ॥ सिवामहंतारिका च विद्यावामहदि
प्रिया ॥ मनोहराकालिनी च विश्वेशी विश्वतारिणी ॥ १३ ॥

रत्ना रत्नप्रियाद्यो रत्नकराणां के कनादिनी ॥ कर्ली मे टीचियोजे
 सी विनयानुवासिनी ॥ १४ ॥ कलंक मालिनी कोता नाराय
 ॥ १५ ॥ एगीजगदिता ॥ अद्वा दहासिनी हासायजुष्यालिभालिनी
 ॥ १५ ॥ यन्त्र प्रमथनी तन्त्रमाता मप्रकासिनी ॥ रुद्रदेवी ॥ १५
 ललाजिह्वा धामाता सवरी गवी ॥ १६ ॥ मरीचिकालिकालक्ष्मी
 कालचर्मविभ्रषिणी ॥ धामाता कालिका धूपकालि विस्व

विमर्दिनी ॥ १७ ॥ संग्रामकालिका कालचंचिनी राववादिनी ॥
 आलान नाकरलीच धूम्रकाली रणप्रिया ॥ १८ ॥ अमरान्न
 रकालीच चण्डीश्वर नमालिनी ॥ कुलीका तंकरलीच मा
 हेसी कृष्णपिंगला ॥ १९ ॥ पातालिनी पापहर पातालस्ये
 दिनीसिया ॥ रावराविशीरो द्रास्या गंभसं भनकालिका ॥ २० ॥
 मक्षवक्राचण्ड योगे ईश्वरी पुण्ड्रगिरस्मता ॥ मृग

नीचस्वधासाधूमा गंगा तदाद्रता ॥ २१ ॥ आदेसकालिकोशो भका
ली मेलापकालिका ॥ आकर्षकालि आकर्षिसानि नीनेत्रकालि
का ॥ २२ ॥ परमार्कमहाकालिनेत्रकालीसूराश्रिता ॥ भक्तवत् ॥ १९६ ॥
॥ १९६ ॥ श्रीभक्तसेवाकमलालयवासिनी ॥ २३ ॥ पंचप्राणेश्वरी
प्राणरक्षरणीरक्तचंद्रिका ॥ साकं भरीविजलास्तान्दा
भद्राजितानद्या ॥ २४ ॥ मनोन्ममतिहादेष्टुकरवीरनिवा

सिनी ॥ करवीरस्त्रसानस्वालक्ष्मीवनगूहावनी ॥ २५ ॥ गू
हान्विनीगिरीसूतागणराधजयकरी ॥ चरणसूरनिहं
त्रीचचरणसूचन्दुचारिणी ॥ २६ ॥ वृक्षसंकलसंलग्नविस्वली
कारभूषिता ॥ महामंत्रप्रदाकाली महानीषणकालिका
॥ २७ ॥ कूर्दपूषाप्रियास्यामागालककूत्सुप्रिया ॥ स्नयं
भक्तसमानदा ॥ दूतिषट्कसमाग्रणी ॥ २८ ॥ वेश्यावसो रिडनी

शालीश्रुटकीक्षिपिणीकूली॥रजकीबालिनीबालाधामी
धामांभनप्रदा॥२८॥केवनीभदकीकोलीबालिनीक्ष
त्रिनर्तिनी॥चक्रिनीपौष्करणीसूरीधीवरीचर्मका॥२९॥
॥३०॥रिणी॥३१॥मातङ्गीमतकीवेश्यावायकीसौनकीप
रा॥चारङ्गलीध्वजिनीवेश्यामहामात्यतस्त्रकी॥३१॥
महाक्रमकालीचक्रालकालीचक्रालिका॥सद्वक्त्री

महाकालीकालीकावृजकालिका॥३२॥स्वर्णकोटस्वरीका
लीराजराजस्वरीस्त्रना॥महाइमरकालीचक्रासाकालीच
क्रोगिनी॥३३॥गृहेस्वरीमहाकालीमहासूत्रायकालि
का॥योगिनीकालिकादेवीनवदुर्गावनप्रिया॥३४॥मातं
ङ्गीमदिरमतानरकासरतासदा॥सबरीसावरीसेलस
रणागतन्यरा॥३५॥वत्सरवाहणीदेवीमहेसीमद

गामिनी॥ दुर्ध के सीनिका मारव्या चक्र के सीनिमर्दिनी॥
॥३६॥ उग्र काली चक्र काली काली श्री सीतिका तथा॥ च
र्म काली शान काली राविनी कालिका यरा॥३७॥ लीलावती॥१८॥
॥१८॥ कालिकारात्री मती कालिका ततः॥ छुरिका कालिका प्राण
रूँकारा राव कालिका॥३८॥ महा कूर कालिच महा करेलि
कालिका॥ मादिनी कालिका माया स्वामिनी नाम कालिका॥

॥३९॥ हासिनी कालिका दीर्घ काली नूतन मोहिनी॥ स्तब्धि
काली स्थिती काली सैतार कालिका कृत॥४०॥ हंस काली
यम काली कालग्रसंन कालिका॥ विघ्नोत्त कारिणी काली च
षन ध्वज कालिका॥४१॥ कुक्कुट ध्वज काली च गरुड ध्वज का
लिका॥ मयूर वाहिनी काली हंस ध्वज निवासिनी॥ कालरा
त्री महा काली च राड च राड स्वरी स्मृता॥ कलाली काकल ली च

मदानन्दनचारिणी ॥ ४३ ॥ विंध्यवासीन्य पर्येसी विरली घरि
 प्रमिता ॥ वीरे स्वरी कालिका च महा कृतान कालिका ॥ ४४ ॥ रक्त
 रक्ते स्वरी का ॥ ली कालाग्नी कालिका परा ॥ फेत्कारिणी कोरू ॥ १२ ॥
 ॥ १४ ॥ कीचरामाई स्वर वधूभा ॥ ४५ ॥ अपर्यात्रि पूरा तारा उग्र
 तारा कलंकिनी ॥ वार्तारी काचवारा ही वरा हव दना घना ॥ ४६ ॥
 अभिनी हंभिनी काली संभिनी मोहिनी कला ॥ जंभिनी

जयदाजे विजग दं ध्या जगत्यसू ॥ ४७ ॥ डाकिनी राकिनी का
 ली लाकिनी साकिनी मरणा ॥ काकिनी हाकिनी सीलायाकि
 नी धातूवासिनी ॥ ४८ ॥ कंकाल तोरणवती महापिनवने
 त्वरी ॥ स्मसानवासिनी रौडी द्योरा द्यो रतन प्रमिता ॥ ४९ ॥
 सृष्टिस्थित्यंत संहार कारिणी विश्वधारिणी ॥ त्रिगा
 र्गगनि संघारी वलरंघुनिवासिनी ॥ ५० ॥ षड्चक्रनेदि

नी गृह्या मक्तमानसवासिनी ॥ जनीजनीजीजननीजयमातर
रोत्तरी ॥ ५१ ॥ वल्लविश्यावल्लवेद्या • वल्लारुकोटि व्यापिनी ॥
॥ २० ॥ वामाचाररतावामानग्रादहिरुगकालिका ॥ ५२ ॥ अर्पुकारिणी ॥ २० ॥
रामवशीटंकारविवधेस्वरी ॥ मृत्तकेलीविरुपाक्षीज
गदानन्ददायिनी ॥ ५३ ॥ अर्केस्वरीचक्रंकारचक्रमार्गी
सारिणी ॥ सहस्रकोटिसूर्याणीतेजसातेजरासिनी ॥ ५४ ॥

सहस्रकोटिसोमानाममृतश्रावणीप्रदा ॥ गृह्याआयोगि
नीयुज्यासदामृतामृतप्रदा ॥ ५५ ॥ सप्तविंशतिमूरुस्यत्रि
मूरुवानवल्लोचना ॥ सरस्वतीगायत्रीसावित्रीमंगलेस्व
री ॥ ५६ ॥ वाग्वादिनीकैसहरीकर्मवधविमोचनी ॥
वर्णस्वरीवर्णमयीवर्णमालाविराजिता ॥ ५७ ॥ त्रिलो
कजननीगोपूत्रीतान्यागगनगामिनी ॥ पंचभूतप्रि

॥२१॥

सानिष्ठा पंचपिराड प्र पूजिता ॥ ५८ ॥ सवरूपिणी आकाशे प्र
कासे तेज रूपिणी ॥ गंध रूपिणी भूमान् यवनेत्येव रूपि
णी ॥ ५९ ॥ रसरूपिणी तोयेषु यैव भूतस्वरूपिणी ॥ सुर
भीरूपिणी युव्ये दुग्धे लार्पित्वरूपिणी ॥ ६० ॥ परब्रह्मा
त्मिका काली जय इत्येव रूपदा ॥ ६१ ॥ पूर्वा सा सिद्धिदा त्रिनरा
क्षसी क्षोमिणी तया ॥ ६२ ॥ जयवर्गी स्वरी श्री श्री वि

आस्यति पूर श्रिता ॥ त्रिपूरा भैरवी ज्ञाना कालिका सय ये रवी ॥
॥ ६३ ॥ चैतन्य भैरवी देवी चण्ड भैरव सिद्धिका ॥ संपत्सुता भैर
वी च मार्गी भैरव मार्गीणी ॥ ६४ ॥ जय श्री भैरवी काली मदा
न्मादन भैरवी ॥ हरसिद्धि प्रसन्नार्ति होरिणी दान वात की
॥ ६५ ॥ पूर्णेश्वरी पूर्णमा पूर्ण देव प्र पूजिता ॥ पूर्ण यात्ररता
नित्या सदाचार विचारिणी ॥ ६६ ॥ पूर्ण बोद्धुं दात्री च सदसदा

धिता ग्रणी ॥ काली कालय काली च सर्वज्ञानं प्रदानया ॥ ६१ ॥
 जयवागी स्वरी द्वी श्रीविद्यास्ति पुरश्चिता ॥ त्रिपुर भैर
 वी ज्ञाणा कालिका लयये रवी ॥ ६२ ॥ चैतन्य भै रवी देवी च ॥ २२ ॥
 ॥ २२ ॥ एत भै रवि सिंहा ॥ संपत्प्रदा भै रवी च मार्ग भै रव मार्ग
 णी ॥ ६३ ॥ जय श्री भै रवी काली मदोन्मादन भै रवी ॥ हर
 सिद्धि प्रसन्नार्तिहारिणी दानवांसे की ॥ ६४ ॥ पूर्ण स्वरी पूर्ण

मना पूर्व देव प्रपूजिता ॥ पूर्ण पात्र रत्नानित्या सदाचारविचा
 रिणी ॥ ६५ ॥ पूर्ण वांछित दात्री च सदस वांछिता ग्रणी ॥
 काली कालय काली च सर्वज्ञानं प्रदानया ॥ ६६ ॥ योगि स्व
 री महा चरण महोदाम न्य हो ग्रणी ॥ लुक्लि स्थिती च सहा
 रे अनास्था भाष कालिका ॥ ६७ ॥ गुरु काली विस्व माता नि
 वी रो सी परे स्वरी ॥ इति श्री परमेश्वरान्या सोत्रं नाम सप्त ह्य

कमर॥६८॥१०० फल सति॥ ॥ स्मृत्यमनुपनिषदं महापात
कनाशनम्॥ महामंत्रोपनिषदं विश्वेसीवित्स्वरूपिणी॥
॥१६८॥ दोषारणचरासयोद्यामेरुमण्डलसन्निभाः॥ पुद
॥२३॥ जेंते तेनक्षिप्रमिधनानि यथाग्नित्ता॥ ११०॥ स्नानेनको॥२३॥
टिर्निधानांमंत्रकोटिजपादिभिः॥ चेन्ननांकोटिदानेन
विप्रारणकोटिभोजनेः॥ १११॥ कोटिश्चाकोटिहोमेनत

पसाजन्मकोटिषू॥ महीकांचनसुवर्णसप्लदीपाद्रिसा
गरा॥ ११२॥ दत्ताचराचरासर्वीनः यत्फलंलभतेधुवम्॥
तत्फलंलभतेसीगंस्तवानांकीर्तनाधुवम्॥ ११३॥ अथम्या
वानवम्यावान्तायांवारवेदिने॥ कृजोवाप्यसवोवाथपठि
तव्यंगुरोपिवा॥ ११४॥ पुकाग्रं चिंतयेदेवीं धूमंलिपरिमा
दिने॥ पूष्यप्रकरसंकीर्णवलिदानपूरस्कृते॥ ११५॥ साजे

नयजये देवीं सुकृज्येन न चिंतयेत् ॥ जन्मकोटि सहस्रेण
यत्पापं समुपाजितम् ॥ १७८ ॥ अनेन भूतमात्रेण वाञ्छिता
वर्षा भवति ॥ आयुरारोग्यमाप्नोति धर्मकामार्थसंनती ॥ १७९ ॥
॥ २४ ॥ ७७ ॥ ईशान्कामानवाप्नोति त्रिरावृत्या न संस्रियः ॥ चन्द्रसूर्यो ॥ २४ ॥
परागेवानवम्यासा रदात्सवे ॥ १८० ॥ सर्वसिद्धिं न मे नूनं
स्यान्नी सप्तमं कुरी ॥ पीठाय पीठसिद्धौ हतिर्धक्षेत्राश्च मादि

कम् ॥ १८१ ॥ असेषां देवतासिद्धा गृहा पर्वतकानना ॥ मंत्राग
नादिसाखाणि वेदाधौ राणि साधका ॥ १८२ ॥ सर्वतंत्रवति वृ
त्तियत्रैदं सावनायकी ॥ यथेनामससहस्रं सर्वदोषनिवर्ह
णम् ॥ १८३ ॥ सिंहकाः प्रेतकृष्णारण्यः पिता चोभूतयुतना
॥ कुरुगृहाश्च साकिनो ये चान्ये दूष्टचेतसाः ॥ १८४ ॥ जगिनी
रक्षसा दोरा ये चान्ये पीडाका जनाः ॥ सिंहकाश्च विनश्यति

ईत्यानोसांकरी कुवम् ॥ १८३ ॥ सर्ववन्ती नते तत्रयत्रे दन्ति वृ
 ते गृहे ॥ सीया मे जय दी स शसो षा सत्र विन स्याति ॥ १८४ ॥
 ॥ २५ ॥ आशुष्मान् धनमान् भूत्वा जायते सूर्यः सखी ॥ नशा ॥ २५ ॥
 मन्तर्जले मग्ना भूतायां भो मवासरे ॥ १८५ ॥ सप्तावर्ते न दे
 वे रीतुस्तु भवति निश्चितम् ॥ कन्या संयुज्या यवारे सस्या
 ये पाठयेत्येते ॥ १८६ ॥ तृक्ष भवति सा देवी सर्वशक्त मवा

पूजान् ॥ आपद्रुधारण नाम धोरं कति सूर्ये महत् ॥ १८७ ॥ स्तो
 तव्याश्च नमस्कार्यी सर्वदेवमयी तृता ॥ सेवने लयते वि
 स्वसेवविश्वं प्रसूयते ॥ १८८ ॥ सेवते हरते काले सेवविश्व
 मयी श्वरी ॥ तृक्ष भवति साने न किमलभ्यं महीतले ॥ १८
 ९ ॥ राज्यं सौरव्यं निरावाधां प्रत्यमो क्षलभे कुवम् ॥ सस्याव
 त्ताण्ड मरिच लंकी जर्ष करण्ड कायने ॥ १९० ॥ तां काल आस

तिरतां कालसंकर्षणी नमः॥ भक्तकाजगत्सर्वमन्त्राकामरु
 पिणी॥१८१॥ यास्तोताकारिणी काली कालसंकर्षणी नमः॥
 परं ब्रह्मस्य रूपासीति त्वान्वधिनी मः॥१८२॥ जगद्भासर ॥२६॥
 ॥२६॥ तां नित्यां कालसंकर्षणी नमः॥ यास्तोताज्ज्वलद्रूपाना
 ना कालमहेज्जला॥१८३॥ सा कालयास निरता कालसंकर्ष
 णी नमः॥ लसिज्यमाना गत्यर्थे नीषणाया सूत्रे रवी॥

॥१८४॥ महानसिंहमारुजे कालसंकर्षणी नमः॥ अलातचक्रव
 द्दिश्वंकी जगत्त्रयतेयया॥१८५॥ तां कालयासनी रतां का
 लसंकर्षणी नमः॥ बुद्धिभुक्ठिरक्षाणी भस्मसात्कुरुते
 मया॥१८६॥ तां कालयासनी रतां कालकाली नमाम्यहम्॥
 नैमिकालीं महद्रूपां प्रधानां चरिभक्षिणी मः॥१८७॥ की
 जगत्त्रयाकरात्रिंशत्पलाण्डवूद्मालिनी मः॥ अंजनादि

निमं काली कोटि सूर्य्यी समप्रभां ॥ १९८ ॥ त्रैलोक्ये रक्षणा
 रतां मंगला प्रणामान्यहम् ॥ गुरु काली मंगलां च सिद्धि
 काली जये स्वरीम् ॥ चर्चिकां त्रिपुरासीं च कालीं च भूव
 ॥ २१ ॥ ने स्वरीम् ॥ २०० ॥ श्री मंगला महा काली निर्माणा यद् ॥ २१ ॥
 दायिनी ॥ मोक्षदां राज्ये दां नित्यादसवक्रां यरं नजे ॥
 ॥ इति श्री हारवामहान्तरे षड्विंशतिसाहस्रे म

हाथवीर्यसंहितायां शिवपार्वतीसामरहस्यं श्री गुरुस्य काली
 देव्याः सहस्रनामाख्या श्रुतिरहस्यं संपूर्णं मज्जमतः ॥ ॥
 ॥ ॥ कैटवं फट्सं सोध्यः ॥ ॥ द्रुं प्रवर्ज्यः ॥ ॥ वैश्वमृति क
 रणं ॥ ॥ अंजेन संरक्ष ॥ इति चतुः संस्कारं ॥ ततो सप्ताक्षरे
 ण त्रिवारं अभिमंत्रये ॥ पुन मूलेन सप्तवारं जपेत् ॥ इति कृत्वा
 रक्तं दनं युक्तेन ॥ करवीरसिवाय नमः ॥ तजिता सक्ति भावन

ओहितीयतामरहस्यं विभाव्य ॥ ततो संकल्प्य ॥ ततो मूले नक्षत्रं
 सुवर्णं इति मन्त्रेण विवेदयेत् ॥ ॐ नमो योग्येश्वराय ॥
 ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं आ नन्दशक्तिभैरवानन्दवीरशक्ति
 तये क्लीं ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं फट् ३ स्वाहा ॥ ॥ अथ
 मन्त्रेण ह्रीं स्मृते सा नमो रवपंचापचा पूजयेत् ॥ मा
 हा धूपं दद्यात् सहस्रं पंचात्वा नानाकार्येति कथ्यते